जो संसार पतन के कारण, उन विकल्प जालों को छोड़।
निर्विकल्प निर्द्वन्द आत्मा, फिर फिर लीन उसी में हो।।
स्वयं किये जो कर्म शुभाशुभ, फल निश्चय ही वे देते।
करे आप फल देय अन्य तो, स्वयं किये निष्फल होते।।

अपने कर्म सिवाय जीव को, कोई न फल देता कुछ भी।
पर देता हैं यह विचार तज, स्थिर हो छोड़ प्रमादी बुद्धि।।
निर्मल सत्य शिवं सुन्दर हैं, अमित गति वह देव महान।
शाश्वत निज में अनुभव करते, पाते निर्मल पद निर्वाण।।

सामायिक पाठ भाषा

1. प्रतिक्रमण कर्म

काल अनन्त भ्रम्यो जग में सहिये दुःख भारी।
जन्म-मरण नित किये पाप को हैं अधिकारी।।
कोटि भवांतर मांहि मिलन दुर्लभ सामायिक।
धन्य आज मैं भयो योग मिलियो सुख दायिक।।१।।

हे सर्वज्ञ जिनेश ! किये जे पाप जु मैं अब।
ते सब मन-वच-काय-योग की गुप्ति बिना लभ।।
आप समीप हजूर मांहि मैं खड़ो खड़ो सब।
दोष कहूँ सो सुनो करो नठ दुःख देहि जब।।२।।

क्रोध मान मद लोभ मोह मायावशि प्रानी।
दुःख सहित जे किये दया तिनकी नहिं आनी।।
बिना प्रयोजन एकेन्द्रिय बितिचउ पंचेन्द्रिय।
आप प्रसादहिं मिटै दोष जो लग्यों मोहि जिय।।३।।

आपस में इकठौर थापकरि जे दुःख दीने।
पेलि दिये पगतलैं दावि करि प्राण हरीने।।
आप जगत के जीव जिते तिन सब के नायक।
अरज करूँ मैं सुनो दोष मेटो दुःख दायक।।४।।

अंजन आदिक चोर महा घनघोर पाप मय।
तिनके जे अपराध भये ते क्षमा क्षमा किय।।
मेरे जे अब दोष भये ते क्षमहु दयानिधि।
यह पाडिकोणो कियो आदि षटकर्म मांहि विधि।।५।।

2. द्वितीय प्रत्याख्यान कर्म

इसके आदि व अन्त में आलोचना पाठ बोलकर फिर द्वितीय सामायिक कर्म का पाठ करना चाहिये।

जो प्रमादवशि होय विराधे जीव घनेरे।
तिनको जो अपराध भयो मेरे अघ ढेरे।
सो सब झूठो होउ जगतपति के परसादै।
जा प्रसाद तै मिलै सर्व सुख दुःख न लाधै।।६।।

मैं पापी निर्लज्ज दया करि हीन महाशठ।
किये पाप अघ ढेर पाप मति होय चित्त दूठ।।
निंदूँ हूँ मैं बार-बार निज जिय को गरहूँ।
सब विधि धर्म उपाय पाय फिर पाप न करहूँ।।७।।

दुर्लभ है नर जन्म तथा श्रावक कुल भारी।
सत संगति संजोग धर्म जिन श्रद्धाधारी।।
जिन वचनामृत धार समावर्ते जिनवानी।
तोहू जीव संधारे धिक-धिक-धिक हम जानी।।८।।

इन्द्रिय लंपट होय खोय निज ज्ञान जमा सब।
अज्ञानी जिमि करै तियी विधि हिंसक व्है अब।।
गमनागमन करंतो जीव विराधे भोले।
ते सब दोष किये निंदूँ अब मन वच तोले।।९।।

आलोचन विधि थकी दोष लागे जु घनेरे।
ते सब दोष विनाश होष तुम तैं जिन मेरे।।
बार बार इस भाँति मोह मद दोष कुटिलता।
इर्षादिक तें भये निंदिये जे भयभीता।।१०।।

3. तृतीय सामायिक भाव कर्म

सब जीवन में मेरे समता भाव जग्यो हैं।

सब जिय मो सम समता राखो भाव लग्यो है।।
आर्त रौद्र द्वय ध्यान छाँड़ि करिहूँ सामायिक।
संजम मो कब शुद्ध होय यह भाव बधायिक।।११।।

पृथिवी जल अरु अग्नि वायु चउ काय वनस्पति।
पंचहि थावर मांहि तथा त्रस जीव वसैं जिति।।
वे इंद्रिय तिय चउ पंचेन्द्रिय माँहि जीव सब।
तिन तैं क्षमा कराऊँ मुझ पर क्षमा करो अब।।१२।।

इस अवसर में मेरे सब सम कंचन अरु तृण।
महल मसान समान शत्रु अरु मित्रहिं समगण।।
जामन मरण समान जानि हम समता कीनी।
सामायिक का काल जितै यह भाव नवीनी।।१३।।

मेरो है इक आतम तामैं ममत जु कीनो।
और सबै मम भिन्न जानि समता रस भीनो।।
मात पिता सुत बंधु मित्र तिय आदि सबै यह।
मोतैं न्यारे जानि जथारथ रूप कह्यो गह।।१४।।

मैं अनादि जग जाल माँहि फँसि रूप न जाण्यो।
एकेंद्रिय दे आदि जंतु को प्राण हराण्यो।।
ते सब जीव समूह सुनो मेरी यह अरजी।
भव भव को अपराध छिमा कीज्यो कर मरजी।।१५।।

4. चतुर्थ स्तवन कर्म

नमौं ऋषभ जिनदेव अजित जिन जोति कर्म को।
सम्भव भवदुःख हरण करण अभिनन्द शर्म को।।
सुमति सुमति दातार तार भव सिंधु पार कर।
पद्मप्रभु पद्माभ भानि भवभीति प्रीति धर।।१६।।

श्रीसुपार्श्व कृत पाश नाश भव जास शुद्ध कर।
श्री चन्द्रप्रभ चन्द्र कान्ति सम देह कांतिधर।।
पुष्पदन्त दमि दोष कोष भविपोष रोषहर।
शीतल शीतल करण हरण भवताप दोष कर।।१७।।

श्रेयरूप जिनश्रेय ध्येय नित सेय भव्यजन।
वासुपूज्य शतपूज्य वासवादिक भवभयहन।।
विमल विमलमति देन अन्तगत हे अनन्त जिन।
धर्मशर्म शिवकरण शान्तिजिन शान्ति विधायिन।।१८।।

कुंथु कुंथुमुख जीवपाल अरनाथ जाल हर।
मल्लि मल्लसम मोहमल्लमारण प्रचार धर।
मुनिसुव्रत व्रतकरण नमत सुरसंघहि नमिजिन।
नेमिनाथ जिन नेमि धर्मरथ मांहि ज्ञानधान।।१९।।

पार्श्व नाथ जिनपार्श्व उपलसम मोक्ष रमापति।
वर्द्धमान जिन नमूं नमूं भव दुःख कर्मकृत।।
या विधि मैं जिन संघ रूप चउवीस संख्यधर।
स्तवूं नमूं हूँ बारबार बन्दूं शिव सुखकर।।२०।।

5. पंचम वंदना कर्म

बन्दूं मैं जिनवीर धीर महावीर सुसनमति।
वर्द्धमान असिवीर बन्दि हूँ मनवचतन कृत।।
त्रिशला तनुज महेश धीश विद्यापति बन्दूं।
बंदौं नित प्रति कनक रूप तनु पापनिकंदू।।२१।।

सिद्धारथ नृपनंद द्वंद्व दुःख दोष मिटावन।
दुरित दवानल ज्वलित ज्वाल जगजीव उधारन।
कुण्डल पुर करि जन्म जगत जिय आनंद कारन।
वर्ष बहत्तर आयु पाय सब ही दुख टारन।।२२।।

सप्तहस्त तनु तुंग भगकृत जन्ममरण भय।
बालब्रह्म मय ज्ञेय हेय आदेय ज्ञानमय।
दे उपदेश उधारि तारि भवसिंध जीवघन।
आप बसे शिवमांहि ताहि वंदौ मन वच तन।।२३।।

जाकें वंदन थकी दोष दुःख दूरहि जावै।
जाके वंदन थकी मुक्तितिय सन्मुख आवै।
जाके वंदन थकी वंद्य होवें सुरगन के।
ऐसे वीर जिनेश बन्दि हूँ क्रम युग तिनके।।२४।।

सामायिक षट्कर्ममांहि वंदन यह पंचम।
वंदौ वीर जिनेंद्र इंद्रशत वंद्य वंद्य मम।।
जन्म मरण भय हरो करो अघ शान्ति शान्तिमय।
मैं अघ कोष सुपोष दोष को दोष विनाशय।।२५।।

6. छठा कायोत्सर्ग कर्म

कोयोत्सर्ग विधान करूं अंतिम सुखदाई।
काय त्यजन मय होय काय सबको दुःखदाई।।
पूरब दक्षिण नमूं दिशा पश्चिम उत्तर मैं।
जिनगृह वंदन करूं हरूँ भवतापतिमिर मैं।।२६।।
शिरोनति मैं करूं नमूं मस्तक कर धरिकै।
आवर्तादिक क्रिया करूं मन वच मद हरिकैं।
तीनलोक जिन भवन मांहि जिन हैं जु अकृत्रिम।
कृत्रिम हैं द्वय अर्द्ध द्वीप मांहि बंदौं जिम।।२७।।
आठ कोड़ि परि छप्पन लाख जु सहस सत्याणूं।
च्यारि शतक-पर असी एक जिनमंदिर जाणूं।
व्यंतर ज्योतिष मांहि संख्य रहिते जिन मंदिर।
ते सब वंदन करूं हरहुँ मम पाप संधकर।।२८।।
सामायिकसम नाहिं और कोउ वैर मिटायक।
सामायिक सम नाहिं और कोउ मैत्री दायक।।
श्रावक अणुव्रत आदि अन्त सप्तमं गुणथानक।
यह आवश्यक किये होय निश्चय दुःखहानक।।२९।।
जे भावि आतम-काज-करण उद्यम के धारी।
ते सब काज विहाय करो सामायिक सारी।
राग द्वेष मदमोह क्रोध लोभादिक जे सब।
बुध 'महाचन्द्र' विलाय जाय तातै कीज्यो अब।।३०।।